सफलता का रहस्य

एक युवक बार-बार मिली असफलता से ऊबकर हताश होकर एक पेड़ के नीचे बैठा था, इतने में उसकी नज़र बायें रास्ते पर लगे बोर्ड की ओर गई। बोर्ड पर लिखा हुआ था - ``सफलता का मार्ग इस ओर है''।

वो युवक पुलकित हो गया। उसे किसी भी तरह से सफलता का रहस्य जानना था। निष्फलता की बौछार ने उसे हतप्रभ बना दिया था। वो युवक खड़े होकर उस दिखाई देनेवाले बोर्ड के अनुसार मार्ग की ओर आगे बढ़ने लगा।

थोड़ी देर के बाद उसने एक छोटी सी गहरी खाई देखी...उसके समाने लिखा था- ``सफलता का मार्ग इस ओर! जम्प लगाना आता है?''

- ब्र. कु. गंगाधर

उस युवक ने दो-तीन बार छलांग(जम्प) लगाने की कोशिश की पर वो सफल नहीं हुआ। लेकिन वो सफलता पाने का रहस्य जानने के लिए अदम्य उत्साह में था। आखिरकार वो जम्प लगाकर खाई को पार कर गया। उससे एक-दो किलोमीटर की दूरी पर आगे गया तो वहाँ तीसरा बोर्ड दिखाई दिया- सफलता का मार्ग इस ओर... वो आगे बढ़ा। सामने एक नदी थी। उसके किनारे पर सफलता के मार्ग का चौथा बोर्ड था, सफलता के लिए नदी पार करें...तैरना आता है?

युवक घबरा गया। नदी कितनी गहरी होगी, मैं डूब गया तो!

लेकिन उसने हिम्मत रख नदी में छलांग लगाई। उसे ख्याल आया कि नदी तो छिछरी है, गहरी नहीं है। तैरने की तो ज़रूरत ही नहीं है। उसने आनंदपूर्वक नदी को पार कर लिया।

दो किलोमीटर जितना पैदल चला तो उसे पाँचवा बोर्ड दिखाई दिया- `सफलता के मार्ग को जानने के लिए सामने की ओर नज़र करें। उस शिखर पर पहुँचेंगे तो सफलता का रहस्य मिल जायेगा।

उसने सामने की ओर अपनी नज़र की तो टेढ़ा-बांका रास्ते का पर्वत शिखर! चढ़ना बहुत कठिन और खतरे से खाली नहीं, लेकिन युवक को अब हिम्मत आ गई थी। उसने चढ़ना आरंभ किया...उसे शिखर पर तीन बोर्ड दिखाई दिये। पहले बोर्ड पर लिखा थाः अपनी इच्छा, ज्ञान और क्रिया को अलग-अलग रखकर भटकने न दें। दूसरे बोर्ड पर लिखा थाः आप अपने से न घबरायें, न हारें। तीसरे बोर्ड पर लिखा थाः सफलता के लिए आपको यह तीन शस्त्र लगेंगे। अपनी आँखें खुली रख परिस्थितियों का मूल्यांकन करो, उद्देश्य की ओर महत्वाकांक्षापूर्ण दृष्टि रखो, जो काम आपको करना है उसके लिए योग्यता अर्जित करो, आने वाले विघ्नों को हटाते रहो और आवश्यक साहस जुटाने में पीछे नहीं हटो।

युवक की थकान मिट गई। उसमें नयी चैतन्यता का उद्गम हुआ और एक कारखाना स्थापित कर, रात-दिन मेहनत कर एक उद्योगपति बनने में वो युवक सफल हुआ।

बहुत लोगों में शक्ति भी होती है और बुद्धि भी। फिर भी वे खुद सफल नहीं होने की आशंका व्यक्त करते रहते हैं। उनकी निष्फलता का कारण ये होता है कि वे निष्ठा और समर्पण का बीज बोये बिना ही अत्यधिक कमाई की अपेक्षा रखते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि योग्य आयोजन और काबिल नेतृत्व के बिना महासेनाएं भी युद्ध में हार गई हैं और योजनाबद्ध रीति से लड़ने वाली और दृष्टिसम्पन्न नेता की अगुवाई में छोटी सी सेना भी विजय की वरमाला पहनने की अधिकारी बनी है। इसलिए बुद्धिपूर्वक आयोजन को सफलता की सीढ़ी बनाना ही श्रेष्ठ विकल्प है।

सफल मनुष्य जब तक कार्य सर्म्पूण न हो तब तक वाणी पर नियंत्रण रखता है। वो खुद बोलता नहीं; उसका काम ही उसकी वकालत करता है। मनोभाव को शांत रखना और सदैव आशान्वित रहना, ये निर्धारित लक्ष्य सिद्धि के मददगार हैं। पराजयों की सूचि को याद करने वालों को भूलकर निर्भय बन, उमंग-उत्साह से तत्पर व्यक्ति आसन आगे बिछाता है।

इच्छायें तो पहल किये बिना हीरे जैसी हैं। उसका मूल्य परखकर पासादार बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। प्रयत्नों की सत्यता, ये सफलता की यात्रा को किनारे पहुँचाने की नौका के चप्पु हैं। सफलता की व्याख्या करते किसी - शेष पेज 8 पर

पुण्यात्मा वह है जो अच्छे संग में रहे, सबको अच्छा संग दे

जो मंथन नहीं करता है वो मोटी बुद्धि है। ज्ञान है सोल कॉन्सेस रहना, इसके लिए ड्रामा की नॉलेज स्मृति में रहे। सबसे बड़ी बीमारी है - थकना, मूँझना, घबराना। मेरे से नहीं होता है ना अरे, कौन हो! बकरी हो क्या? जितनी भी स्थिति जिसकी है, सेवा और संग, साथ से फायदा होता है।

परिवर्तन मुझे होना है, बाबा देखेगा बच्ची को कोई बात नहीं, सभी देखेंगे इसको और कोई बात ही नहीं है, परिवर्तन भी क्या होना है? विकर्माजीत बनना है। उसकी निशानी है, कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। जो संकल्प आता है तो वह कर्म में भी आता है। बहुत डीप है। मेरा संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ है तो इससे मेरे लिए भी फायदा, आपको भी फायदा। एक तरफ मैं विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ कर रही हूँ, दूसरे तरफ कर्म करते कर्मातीत, सम्बंध में होते कर्मातीत यानि किसी के साथ हिसाब-किताब नहीं। यह शुद्ध संकल्प भावना वाला संकल्प औरों को भी परिवर्तन करता है। पर पहले मैं ऐसा स्वरूप रहूँ विकर्माजीत, कर्मातीत और श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो बाबा कैसा था, वह अनुभव करें क्योंकि आप सभी भी बैठे हो, सिर्फ बाबा का परिचय सुनने से नहीं बैठे हो, बाबा कैसा था, अभी भी कैसा है... जिसको परिवर्तन होना है वह दस बारी बाबा के रूम में जावे। जा करके आधा घण्टा बैठो, पता चलेगा बाबा कैसा है, उन जैसा मुझे बनना है। मुझे किससे भेंट नहीं करनी है क्योंकि हरेक का पार्ट अपना है। सबका भला हो, यह भावना हो तो परिवर्तन मुझे क्या होना है, बस, बाबा जैसा! बाबा कैसा था, कैसा है, अभी भी है, अच्छी तरह से काम कर रहा है और ज़्यादा कर रहा है। तो जहाँ ऐसे अच्छे स्थान मिले हैं उनका फायदा उठाओ। जब याद में बैठो तो कोई संकल्प न चले, भले कार्य हुआ, पूरा हुआ। पूछे कोई कैसे किया? देखो वंडर है, कहो हो गया। सेवा है मुस्कराने की। देखते हैं इतना सब कार्य करते हुए भी खुश रहते हैं।

एक मन की सफाई, दूसरी स्थूल सफाई न होती तो बीमारियाँ हो जाती, तीसरा मुस्कराना न आता हो तो भी बीमार कहेंगे। यह परिवर्तन की घड़ियाँ हैं, अभी मुझे होना है तो बाबा और परिवार एकदम साथ देता है। परिवार का प्यार बहुत काम करता है।

सब बातों का ज्ञान तो है ना, मेरा पूर्व जन्म का या इस जन्म का भी कोई कर्मबंधन हो, किसी के साथ भी, भले वह मेरे बहन भाई या पति पत्नी हैं, जन्म ही लिया या शादी भी किया, वह पूर्व जन्मों के कर्मों अनुसार। पर अभी उस लौकिक लाईफ का अंश मात्र भी न हो, जैसे बाबा, यह मेरी बहू है, यह मेरी वाईफ है, यह भान नहीं रहा। बाबा के बने हैं तो भाग्यवान हैं, पर ईश्वरीय परिवार में चलते-चलते किसके साथ कोई हिसाब-किताब ऐसा होता है जो रियलाईज़ नहीं करते हैं, बढ़ाते रहते हैं, फिर वह चुक्तू करने के लिए बड़ी रियलाईज़ेशन चाहिए। यह हमारी अभी की लाईफ ही डिफरेन्ट है। हम क्या थे, क्या हैं...। पहले थे बॉडी-कॉन्सेस, अभी सोल-कॉन्सेस हैं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

तो सम्बन्ध में न्यारे हो करके रहो, किसको दुःख नहीं दो। ऐसे अच्छे कर्म करेंगे, आज्ञाकारी रहेंगे तब आशीर्वाद मिलेगी। जब मैं अच्छी बनूंगी तब आप सब से दुआयें मिलेगी। मैं अच्छे संग में रहूँ, औरों को यह संग दूँ, यह है पुण्यात्मा बनना। बाबा देखता है बच्चा देह-अभिमान को छोड़, न्यारा बन मेरी याद में बैठा है तो बाबा का प्यार मिलता है। यह शक्ति है याद में। जैसे साकार में बाबा को देखने से अशरीरी हो जाते थे फिर ऐसी ही आदत डालनी है। योग के वायब्रेशन से औरों को साक्षात्कार होगा, कइयों को मधुबन का साक्षात्कार यहाँ बैठे होता है। मधुबन आते हैं तो मधुबन को देख भूलते नहीं है, तो वह शक्ति चला रही है। सब राज़ी-खुशी हो तो दुआयें सबकी चला रही है, बाबा की अलग हैं, बाबा दुआओं के साथ गुप्त सकाश भी देता है। शिवबाबा कहता है मैं इनसे कराता हूँ, मैं नहीं करता, ऐसी देही-अभिमानी स्थिति, ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न हो। तो बाबा को ऐसा लायक बच्चा चाहिए जो बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बने।

बाबा ने हमें ड्यूटी दी है खुश रहने और सभी को खुश रखने की

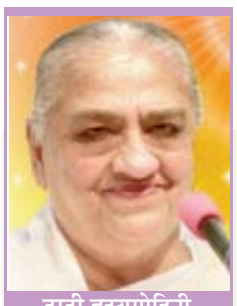

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

आप सबके मन की खुशी आपके चेहरे से दिखाई दे रही है और ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनने के बाद तो ज़्यादा खुशी ही रहती है। कोई कारण वश कोई की खुशी कभी थोड़ी कम हो जाती है तो भी बी.के. को फिर से वापस खुश होने में टाइम नहीं लगना चाहिए। उसी समय ही बाबा के पास जाके बाबा को कहना चाहिए बाबा हमारी खुशी हमारे पास ही रहेगी। और बाबा से खुशी लेके चलेंगे, फिरेंगे, देखेंगे, सब कार्य व्यवहार करेंगे तो कभी खुशी कम नहीं होगी। वैसे खुशी गंवानी नहीं चाहिए, खुशी गंवाने से आपने देखा होगा कि अवस्था अच्छी नहीं रहती है। ऐसे भी खुश रहने वाला ही सबको अच्छा लगता है, या सीरियस रहना अच्छा लगता है? बाबा की शक्ल देखते हैं तो सदा खुशी की लगती है ना! बाबा बहुत अच्छा लगता है ना। जैसे बाबा सबको अच्छा लगता है, ऐसे हम भी सभी को अच्छे लगें। अच्छे लगने चाहिए ना? सबका बाप से प्यार बहुत है तो बाप समान बनना है ना! तो फिर यही ट्रायल करो रोज़ सवेरे उठते ही अपने से विशेष यह प्रॉमिस करो कि इस सप्ताह में कुछ भी हो जाए किसी भी कीमत पर मुझे मेरी खुशी नहीं गंवानी है। जैसे ही सवेरा आरंभ हो तब से लेकर सारा दिन और रात को सोने तक खुश रहना है और खुश करना है, यह याद रखना है। हर घण्टे चेक करके नोट करो अभी जो समय बीता वो खुशी में बिताया या खुशी के साथ गम तो नहीं रहा? सारा दिन रात खुशी आई और गई, ऐसे तो नहीं होता?

योग में बैठते हैं बाबा से मुलाकात करते हैं, तो बाबा को कहना चाहिए बाबा मुझे आज खुश रहना है, इसमें आप मददगार बनना, ऐसे बाबा से बातें करना तो कभी खुशी नहीं जाएगी। ऐसे बी.के. की खुशी जानी नहीं चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दुनिया का क्या हाल होगा? क्योंकि बाबा ने हम बच्चों को निमित्त बनाया सबको खुश रखने का काम दिया है या कहे ड्यूटी दी है बाबा ने। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को कैसे खुश करेंगे इसलिए हमको तो पहले खुश रहना पड़ेगा ना। तो सदा खुश रहना चाहिए ना। हमेशा याद रखो बाबा ने हमारे ऊपर क्या ड्यूटी रखी है! यही ड्यूटी दी है खुश रहो खुश करो। तो याद रहती है ना बाबा की ड्यूटी? बहुत अच्छा क्योंकि संसार बहुत दुःखी है, उसे हमको बदलना है, हमारा काम ही क्या है? दुःखी को सुखी बनाना। हम खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को खुश कैसे करेंगे? हो सकता है ना! बस, जिस समय कुछ होवे ना, तो पहले बाबा शब्द याद करो, बस बाबा कहा और खुशी में रहने की जो बाबा से प्रतिज्ञा की है वो याद आने से खुश रहेंगे। बाबा से प्रॉमिस किया है तो उसे बार-बार याद करने से भी खुशी आ जायेगी। इसमें भले दो-दो-हाथ उठाओ। भगवान के हम बच्चे खुश नहीं रहेंगे तो और कौन रहेंगे।

दिल से मेरा बाबा कहो तो दिल खुश रहेगी। मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। प्यारा कैसे भूल सकता है! बाबा ने बहुत खुशी का खज़ाना दिया है तो कभी भी हमारे फेस से खुशी गायब नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो परमात्मा के बच्चे और खुश न रहें, यह हो ही नहीं सकता इसलिए खुशी कभी नहीं गंवाना, जो भी कोई कुछ बात हुई हो उसे किसी को सुना करके व कैसे भी करके पेट से निकाल दो। उसको अंदर में नहीं रखो। बाबा के बच्चों को कभी भी कोई अचानक देखे ना, तो खुशी वाली शक्ल ही दिखाई देवे। हो सकता है? अच्छा लगता है ना आपस में ऐसे मिलने से खुशी होती है ना। वाह बाबा वाह, वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह!